Paper -4 Unit 3rd (b) Story telling method

(1) कहानी विधि
(STORY TELLING)

/ कथन विधि

प्रस्तावना—समष्टि रूप से भावना तथा चिन्तन का संयोजन कल्पना एवं सत्य का संश्लेषण और इन दोनों तत्वों से सम्मिश्रित तथा सुसम्बन्धित चेतना का नाम ही मानव जीवन है। जहाँ यह मानव जीवन है वहाँ उसकी कहानी भी अवश्य है। अत: कहानी कहने की परम्परा उतनी ही पुरातन है जितना पुराना हमारा जीवन है। जीवन में ऐसे अनेक क्षण और ऐसी घटनाएँ आती हैं जो थोड़े समय के लिए आकर भी हमें चमत्कृत कर जाती हैं। कहानी उन क्षणों और घटनाओं की विवरणात्मक यादगार है। मानव केवल अनुभावक ही नहीं, प्रकाशक भी है। उसके हार्दिक, तीव्र एवं व्यापक रागात्मक भाव जन, जग और जीवन में संयोजित क्रियाकलापों के प्रकटीकरण के लिए तड़फा करते हैं अत: परोपेक्षित प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति-व्याकुलता ही कथा साहित्य की सृजन सूचना है। कहानी हमारे जीवन का प्रतिबिम्ब है, कौतूहल है।

प्रेमचन्द ने लिखा है—"कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।............वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि वह एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

कहानी शिक्षण के उद्देश्य

(1) उपनिषदों तथा पुराणों की कहानियाँ।

(2) पंचतन्त्र तथा हितोपदेश काल की कहानियाँ।

(3) जातक कथाएँ।

(4) प्राकृत भाषा की कहानियाँ।

(5) ब्रजभाषा की कहानियाँ।

(6) आधुनिक कहानियाँ।

कहानी पढ़ाने अथवा सुनने के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(1) स्वस्थ मनोविनोद और मनोरंजन की शिक्षा देना।

(2) बालकों को स्पष्ट एवं तर्कसंगत ढंग से विचार करना सिखाना।

(3) उन्हें अपनी कल्पनाशक्ति के प्रयोग के अवसर प्रदान करना।

(4) उनके संवेगों को प्रशिक्षित करना।

(5) उनके सम्मुख व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार के आदर्श उपस्थित करना।

(6) उनकी भाषा एवं शैली विषयक रुचि का परिष्कार करना।

(7) उनके हृदयगत भावों को क्रमबद्ध, तर्कपूर्ण, सुशृंखलित एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने के साधन प्रस्तुत करना।

कहानी कथन तथा कक्षा—वर्तमान काल में मनोविज्ञान की नवीन खोजों ने शिक्षा क्षेत्र में महान् परिवर्तन ला दिया है। अब शिक्षक नहीं, विद्यार्थी शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है। बालक को जो भी ज्ञान दिया जाए वह इतने सुरुचिपूर्ण, सरल एवं स्वाभाविक ढंग से दिया जाए कि बालक उसे पाने के लिए प्रयत्नशील हो उठे। अतः बालक को पाठ में रुचि बनाए रखने तथा सुगमता से ज्ञान को हृदयंगम कराने हेतु कथा प्रणाली का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति बालकों में आदिकाल से ही होती है। अध्यापक को कहानी कथन के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कहानी कथन के उद्देश्यों से वह दूर न जा पड़े। कहानी का मुख्य उद्देश्य बोलने की आदत डालना है तथा विचारों की क्रमबद्ध शक्ति बढ़ाना है। कहानी का विषय और उसकी भाषा कक्षा के अनुसार सरल होनी चाहिए जो ज्ञान दिया जाए वह परोक्ष रूप में ही हो, क्योंकि कहानी स्वयं रोचक ढंग से स्व-कर्तव्य निवृत कर देने का प्रधान साधन है।

कहानी शिक्षण विधि—कहानी का निर्वाचन करके कहानी को इस प्रकार बालकों के सम्मुख उपस्थित करना चाहिए जिससे वे अधिक से अधिक बात ग्रहण कर सकें। अधिक ग्रहण मौखिक कहानी कथन द्वारा ही सम्भव है क्योंकि पढ़कर सुनाने से कहानी में नीरसता आ जाती है। रुचि न रहने पर छात्रों का ध्यान एँकाग्र नहीं रहता। शिक्षक के व्यक्तित्व तथा भावों का कोई भी प्रभाव उन पर नहीं पड़ पाता तथा गुरु-शिष्य में निकटत्व की भावना भी उत्पन्न नहीं हो पाती। उसके विपरीत छात्रों का अवधान सुनाई हुई कहानी की ओर एकाग्र रहता है। सुनाते समय अध्यापक की कहानी उसकी अपनी बात हो जाती है। उसमें उसका व्यक्तित्व समा जाता है। इससे विद्यालय में भी घरेलू वातावरण सजग हो उठता है। अतः पुस्तक की कहानी को शब्दशः ग्रहण कर अपने शब्दों में कहना अधिक प्रभावोत्पादन होता है।

कहानी सुनाने की सफलता तभी है, जब बच्चे कहानी सुनते ही सक्रिय हो उठें। उनके हृदय में कहानी में बताई हुई बातों को क्रियात्मक रूप में परिणत करने की लालसा जाग उठे।

कहानी सुनाने वाले का स्वयं उस कहानी में रुचि रखना आवश्यक है, तभी वह बालकों में रुचि उत्पन्न कर सकता है। कहानी सुनाने वाले की सफलता तभी कही जा सकती है जब वह कहानी सुनाने में अपने को भूल जाए, तन्मय हो जाए। कहानी सुनाते समय शिक्षक की दृष्टि के सामने दृश्यों का स्मृति चित्र रहना चाहिए, जिन्हें वह स्वाभाविक गति से सुना सकें। उसकी गति न बहुत तीव्र हो और न बहुत मन्द।

कहानी सुनाते समय आलंकारिक भाषा का प्रयोग विद्यार्थियों की रुचि में बड़ा व्यवधान उपस्थित करता है, अत: कहानीकार की भाषा धारावाहिक, मुहावरेदार और बोधगम्य होनी चाहिए। साथ ही शिक्षक स्वयं विनोदप्रिय हो जिससे विनोदात्मक तथा व्यंग्यात्मक भाषा से कहानी में सरलता आ जाए परन्तु वह व्यंग्य किसी को दु:खी अथवा अपमानित करने वाला न हो।

कहानी कहना एक श्रुति प्राचीन कला है जिसके द्वारा किसी विषय या घटना को मनोरंजन बनाकर छात्रों को उसका ज्ञान सरलता और सफलता से प्रदान किया जाता है। इसका उद्देश्य है—छात्रों में पाठ्य विषय के प्रति रुचि और उत्साह को जाग्रत करना। इसलिए कहानी कहने को औपचारिक शिक्षा (Formal Education) का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है और प्रत्येक शिक्षक को उससे पूर्णरूप से अवगत होने का परामर्श दिया है। **ग्रीन व बरचेना** का कथन है—"किसी कहानी को अच्छी प्रकार कहने की योग्यता को शिक्षक का उचित रूप से आवश्यक गुण माना जा सकता है।"

"The power to tell a story well might not unfittingly be regarded as an essential qualification of a teacher." —**Green and Birchenough**

सावधानियाँ (Precautions in Story Telling)—कहानी प्रणाली के प्रयोग के सम्बन्ध में **रायबर्न** (Ryburn) ने निम्नलिखित सावधानियों का उल्लेख किया है—

(1) कहानी पढ़ी नहीं जानी चाहिए वरन् कही जानी चाहिए। यदि कहानी पढ़ी जाती है तो उसकी अधिकांश रोचकता नष्ट हो जाती है।

(2) कहानी कहते समय शिक्षक को उसे पुस्तक आदि में देखने के लिए नहीं रुकना चाहिए क्योंकि इससे धाराप्रवाहिता और मनोरंजन का क्षय होता है।

(3) शिक्षक जिस कहानी को कहना चाहता है उसे वह आद्योपान्त याद होनी चाहिए।

(4) शिक्षक को कहानी का विवरण उसमें आई हुई घटनाओं के क्रम में देना चाहिए।

(5) छोटे बालकों की कहानियों के मुख्य वाक्यों और वार्तालापों को बार-बार दोहराना चाहिए, क्योंकि बालकों को इसमें आनन्द आता है।

(6) छोटे बालकों की कहानियों में अधिकाधिक क्रियाओं का समावेश होना चाहिए क्योंकि उनको क्रियाओं में आनन्द आता है, विवरण में नहीं।

(7) छोटे बालकों की प्रारम्भिक कहानियाँ उन विषयों के बारे में होनी चाहिए जिनका उन्हें अनुभव हो।

(8) कहानी सरल शब्दों में और स्पष्ट रूप से कही जानी चाहिए। ऐसा न होने से कहानी प्रभावहीन हो जाती है।

(9) कहानी बिल्कुल स्वाभाविक ढंग से कही जानी चाहिए, पर आवश्यकता के अनुसार हाव-भाव और अभिनय अवश्य किया जाना चाहिए।

(10) कहानी कहते समय शिक्षक के सामने उसका मानसिक चित्र उपस्थित रहना चाहिए तभी उसकी कहानी क्रमबद्ध और मनोरंजक हो सकती है।

(11) कहानी बालकों के ज्ञान एवं मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। 10 वर्ष के बालकों को 5 वर्ष के बालकों के लिए उपयुक्त कहानी सुनाना केवल समय को नष्ट करना है।

(12) यदि कहानी में ऐतिहासिक तथ्य नहीं है तो छात्रों की आयु को ध्यान में रखकर उसे छोटा या बड़ा कर देना चाहिए।

(13) कहानी कहते समय शिक्षक को इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह किन उद्देश्यों से कहानी कह रहा है। उद्देश्यहीन कहानी निरर्थक होती है।

(14) कहानी कहते समय हास्य की अवहेलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे बालकों को सजग रखने में सहायता मिलती है।

(15) सभी आयु के बालकों को केवल वे ही कहानियाँ सुनानी चाहिए, जो उनको कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें।